रिकॉर्ड :– कौन आया मेरे मन के द्वारे..... ॐ पिताश्री 15/8/63
बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह बाप है रावण पर जीत पहनाने वाला। सर्व शक्तिवान पारलौकिक परमपिता प०। यह भारतवासी जानते हैं, हमारा नम्बरवन पुराना दुश्मन कौन है। तुम भी जानते हो ना। 5 विकार रूपी रावण, यह है पुराने ते पुराना दुश्मन। सो भी कब से दुश्मन बना है? क्या सृष्टि की आदि से ही दुश्मन है या पीछे दुश्मन बना है? दुश्मन बना है मनुष्यों का। सतयुग–त्रेता में तो दुश्मन होते नहीं। यह बातें दुनिया नहीं जानती। अब दशहरा आवेगा। कहते हैं, यह रावण ....का परम्परा से रिवाज़ चला आया है; परन्तु उनको यह पता नहीं कि रावण कौन है? जलाता कौन? रावण ही बैठ रावण को जलाते हैं। अब दशहरा आवेगा तो इस पर समझाना है। टॉपिक बनानी है मनुष्य का बड़े ते बड़ा दुश्मन कौन है? और है भी पुराना। जलाते आते हैं; परन्तु जाना ही नहीं, क्यों नहीं जल मरता है; क्योंकि जलाने वाले मनुष्य खुद ही रावण हैं। सभी में 5 विकार प्रवेश हैं। (जब) तक यह रावण अथवा आसुरी सम्प्रदाय खुद न जले तब तक वो भी खतम नहीं हो सकते।

(यह) आसुरी सम्प्रदाय जलेगी कैसे? जब भंभोर को आग लगे। आग तब लगती जब महाभारत लड़ाई होती है। रावण सम्प्रदाय अपन को रावण न समझ, सिर्फ बोता(बुत) बनाए हर साल बैठ जलाते हैं। यह बातें तुम बच्चों में भी कोई समझते हैं कि इस रावण (5 विकार) को भगाना है। उनमें भी पहले–2 मु(ख्य) है काम विकार, जिसने बिल्कुल ही काला कर दिया है। भारत को काला किसने किया है? रावण माया ने। काम विकार, क्रोध विकार। रावण के 5 मुख हैं ना। तो हर एक मनुष्य मात्र रावण हैं। जब तक 5 विकार प्रवेश हैं तब तक अपन को राम का बच्चा, राम कह न सके। राम के बच्चे हैं आत्माएँ। अब हरेक की आत्मा जैसे रावण हैं; क्योंकि 5 विकारों की प्रवेशता हैं। अब बच्चों को पहले तो यह समझाना है कि भारत का बहुत पुराना दुश्मन रावण है। रावण जलता ही नहीं। हरेक मनुष्य मात्र, पुरुष और स्त्री दोनों रावण हैं। अगर पुरुष रावण है तो रावण की स्त्री कौन थी? मंदोदरी। तो मेल रावण फिर उनकी स्त्री मंदोदरी। हरेक रावण–मंदोदरी का रूप हैं। एक/दो को दुख ही देते रहते। तो डेविल्स ठहरे ना! आसुरी सम्प्रदाय है। 5 विकार हैं; इसलिए बंदर–बंदरी, रावण–रावणी कहा जाता। जब तक आसुरी सम्प्रदाय खतम न हुई है तो भगवान–भगवती हो कैसे सकते! सतयुग में तो रावण को कब जलाते नहीं। इस समय भगवान आकर रावण–रावणी को भगवान–भगवती बनाते हैं। राम अक्षर कहने से फिर त्रेता तरफ चले जाते। वास्तव में हम सब अक्षर नहीं दे सकते। तो इस टॉपिक पर लिखना है, रावण है भारत का पुराना दुश्मन। हरेक मनुष्य मात्र रावण–रावणी हैं। खुद ही रावण हैं तो रावण को जलाए कैसे सके! तुम कहेंगे, रावण राज्य को शुरू हुए 2500 बरस हुए। अब ऐसे रावण को भगावे कौन? सिवाय भगवान के कोई भगाए न सके। इसलिए रावण रूपी भक्त माथा मारते रहते हैं। भक्त ही जलाते हैं। बड़े–2 राजे ..... रावण जलाने में पार्ट लेते हैं। बड़े ते बड़े रावण कौन हैं? जो बाजारी बैल हैं, जिनको ही ..... कहा जाता। वैश्याएँ फिर अजामेली ... कहेंगे। अजामिल कहा ही उनको जाता जो बहुत ..... बनता है। यह तो बच्चे जानते हैं, इस भारत को कहा जाता है वैश्यालय। जहाँ वैश्याएँ और लम्पट रहते हैं। भगवान बैठ समझाते हैं, वैश्यालय बनाया है रावण दुश्मन ने। बड़े ते बड़ा दुश्मन यह रावण है। जो भी हिन्दू कहलाते हैं, उनका ही नाम रावण–मंदोदरी है। और कोई को हम नहीं कह सकते। गाते भी हैं– राम गयो, रावण गया..... राम आकर रावण और मंदोदरियों को स्वच्छ बनाते हैं। पतित दुनिया को रावण की दुनिया कहा जाता है। 5 विकार पुरुष के, 5 विकार स्त्री के। भुजाएँ भी बहुत देते हैं ना। 10 शी(श) देते हैं। जैसे विष्णु को 4 भुजाएँ देते हैं। तो रावण को फिर 10 भुजा वाला बनाते होंगे। अब तुम जानते हो, हम–तुम सभी रावण थे। अभी तक भी रावण के चम्बे से पूरे निकले हुए नहीं हैं। इन पर जीत पाने में तो बहुत (काम) चाहिए। बच्चे प्रतिज्ञा भी करते हैं, हम पवित्र रहेंगे। बाबा, आपको ही याद करेंगे। फिर भी मंसा संकल्पों का बहुत तूफान आता है। बाप तो कहते हैं, तूफान लगेगा; परन्तु तुमको महावीर हनुमान मिसल बनना चाहिए, जो कोई विकार हिलाए न सके। कोई भी विकार ने हिलाए दिया तो गोया सीता ने राम की आबरू गँवाई। हरेक विकार को पूरा निकालना है, जो उनका तूफान अवस्था को न हिलाए। बहुत खबरदार रहना है। ऐसे कोई न समझे हमारे में 5 विकार प्रवेश नहीं कर सकते हैं। नहीं। रावण किसको छोड़ता नहीं। बाबा भी बतलाते हैं, कितना (प्रयत्न) करते हैं विचार–सागर–मंथन करें, बाबा को याद करें; परन्तु माया का तूफान जितना ... पास आता इतना और कोई पास नहीं। कोई की ताकत नहीं जो कहे, हम महावीर बन चुके हैं। बाप कहते हैं, जितना पहलवान बनेंगे इतना और ही माया सामने आवेगी। यह कौन है, जो फिर मेरे ऊपर जीत पहनते हैं। देहली में 5 विकारों का ड्रामा दिखलाते हैं ना। इसमें बड़ी मेहनत है। एक भी विकार ठण्डा नहीं हो

सकता है, जब तक अंत न आए। पहले तो देही–अभिमानी होना पड़े, तब ताकत आए। चार्ट देखना है, कितना समय योग में रहता हूँ। तब ... कह सके, 5 विकारों में यह विकार जीता है। बाबा ने समझाया है, इन विकारों से बड़ी चोट लगती है। जितना अच्छा पुरुषार्थ करेंगे, महावीर बनेंगे, उतना ही फिर माया ज़रूर परीक्षा लेगी। अनेक प्रकार के तूफान लावेगी। देखती है, यह अपने को अच्छा पहलवान समझता है तो उन पर अच्छी रीति तूफान बरसाती है। इसलिए बाबा कहते, खबरदार रहना, झूठे घमंड में न रहना कि हमारे पास तो कोई विकार नहीं है। पहले–2 तो अशुद्ध अहंकार आता है। निरन्तर हम सोल (आत्मा) का नशा हो रहने की यह अवस्था अंत में आनी है। अपने को परिपूर्ण अब नहीं समझना है। तूफान बहुत आने वाले हैं। बाप को अच्छी रीति याद करना है, सिमर–2 सुख पाओ। मनुष्य तो राम–2 कहते रहते, उसको ही सिमरण समझते। यह तो है अजपाजाप। वे मुख से राम–2 कहते हैं, अंदर भी वो चलता रहेगा। यह सूक्ष्म अजपाजाप हो गया। जैसे मूवी होता है ना। साइलेंस, मूवी और टॉकी। यहाँ तो तुमको चुप रहना है। जाना है मूलवतन। बस, हम चुप होकर याद में बैठे हैं। अंदर में शिव को ही याद करते हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसका शिवबाबा साथ यथार्थ रीति योग हो। ऐसे तो भल शिव के मंदिर में बहुत जाते हैं। शिव का चित्र है; परन्तु कोई वो है थोड़े ही। चित्र तो छोटा बनाना पड़ता है बाकी वो तो एक स्टार अनुसार है। अखण्ड ज्योति ज्योत वो रहने का स्थान तत्व है। मनुष्य फिर समझते, अखण्ड ज्योतिज्योत ही प० है; क्योंकि सन्यासी ब्रह्मा का सा० करते हैं, तो समझते हैं प० लाइट ही लाइट है। बस। परन्तु तुम जानते हो, जैसे आत्मा सितारे अनुसार है वैसे ही आत्माओं का बाप प० भी स्टार अनुसार है। शिवलिंग भी इतना बड़ा दिखलाने लिए बनाया है। है वो भी छोटा, जैसी आत्मा है। शरीर में आत्मा प्रवेश करती है तो पता थोड़े ही पड़ता है कि इसमें भी शिवबाबा आता है। पता तब पड़ता है जब नॉलेज देते हैं। ज्ञान सागर नॉलेजफुल वह है। वह भी है परमपिता प० परम आत्मा। ऐसे नहीं कि वह आत्माओं से कोई बड़ा है। नहीं। बहुत छोटा सितारे अनुसार है। हम चित्र भी इतना ..... हैं तो समझते हैं, इतना बड़ा अन्दर फिर कैसे घुसता होगा। आने–जाने में बाबा को तकलीफ थोड़े ही होती ..... आने से शांति का प्रभाव हो जाता है तब समझते हैं, बाबा की प्रवेशता है। पहले बच्चों को महसूसता होती थी, सन्नाटा हो गया है, बाबा आया हुआ है। वह बाबा ही ज्ञान सागर है। यह ज्ञान दूसरा कोई क.... दे न सके। वो पानी का सागर कितना बड़ा होता है। यह फिर है छोटी तो(ते) छोटी चीज़। पानी का सागर कितना बड़ा और ज्ञान का सागर कितना छोटा स्टार अनुसार है। उनका सा० होता है। बाकी कोई बड़ी लाइट आदि नहीं है। उनको कहते ही हैं, परमपिता प० परम आत्मा, परे ते परे रहने वाली आत्मा। तो विचार करो, कितनी आत्मा होगी। वह ज्ञान का सागर है। ज्ञान से पता पड़ता है, यह ज्ञान सिवाय ज्ञान सागर और कोई दे न सके। वही बीजरूप है, सत् है, चेतन्य है, ज्ञान सागर है, जो सारा समुद्र सियाही बनाओ, झाड़ कलम बनाओ तो भी पूरा न हो। इसमें शास्त्रों की तो बात ही नहीं। तुम जानते हो, यह बाप आकर सुनाते हैं। दूसरा कोई मनुष्य ऐसे सुना न सके। वह कुछ भी सुनावेंगे तो शास्त्रों को याद कर सुनावेंगे। यह तो कहते हैं, मैं आकर सभी वेदों–शास्त्रों का सार समझाता हूँ। आत्मा यह ज्ञान देती है ऑरगंस द्वारा। मनुष्य तो इन बातों को समझते नहीं, धक्के खाते रहते। वो है ही भक्तिमार्ग। भगवान के लिए धक्के खाते हैं। भगवान तो है रचता। ज़रूर नई सृष्टि रचेगा, जिसको स्वर्ग कहा जाता। वहाँ ल०ना० का राज्य है। यह तो भारत में मशहूर है। ज़रूर उन्हों को बाप से वर्सा मिला होगा। कैसे मिला? सो तुम बच्चे जानते हो। इसलिए बाबा कहते रहते, ल०ना० का चित्र उठाय समझाओ कि इन्हों को यह राज्य किसने दिया। बाप बैठ समझाते हैं, राम–राज्य में रावण होता नहीं। वास्तव में ल०ना० के राज्य को हम राम राज्य भी कैसे कह सकते? राम यदि शिवबाबा को कहें, उनका तो राज्य होता ही नहीं। तो शास्त्रों में कितने घोटाले कर दिए हैं। समझाने से भी मनुष्य कुछ समझते नहीं। बुद्धि में नहीं बैठता फिर टीचर क्या करे! टीचर तो सबको नॉलेज देते हैं। तो यह रावण निकालेंगे। तुम पूछ सकते हो, पहला शत्रु कौन है और कब से हुआ? द्वापर से लेकर इस रावण का राज्य शुरू होता है, तो फिर हरेक मनुष्य, नर–नारी रावण–मंदोदरी बन जाते। दस शीश में दोनों को मिलाना पड़े। दोनों ही फिर रावण का बोता(बुत) बना ..... जलाते हैं।

अब बैठ समझावेंगे तो वो लोग समझेंगे, यह इनसल्ट करते हैं; परन्तु इसमें इनसल्ट की तो बात नहीं। यह भगवान बैठ समझाते हैं। और कोई नेशन में ऐसे नहीं करते। दिखाते हैं, राम के 4 भाई थे। दशरथ बाप था। यह है झूठी बातें। 4 भाई तो वहाँ होते नहीं। तो अब तुम समझ गए हो, कैसे रावण खुद ही अपना बोता(बुत) बनाए फिर जलाते हैं। रावण तो इस समय सभी का बाप है ना। सभी रावण के बच्चे हैं। अपने बाप रावण का बुत बनाए बैठ जलाते हैं। समझते हैं, रावण को जलावेंगे फिर राम राज्य होगा। सो तो होता नहीं। समझते हैं, रावण हमारा दुश्मन है; परन्तु है खुद रावण। हम भी कहते हैं, हम अभी कुछ परसेन्ट में रावण है ज़रूर। पहला–2 दुश्मन है देह–अभिमान। वो जब तक गया न है, दुश्मन को जीत न सकते। पहले–2 तो सभी भूलना पड़ता है। हमारा आलराउण्डर पार्ट पूरा हुआ, अब हमको जाना है। अब नाटक पूरा हुआ। अब तो यह चोला छोड़ना है। इस बेहद के ड्रामा में हम एक्टर्स हैं। अभी हम जाते हैं बाबा के घर। यह तो दुखधाम है। बाप कहते हैं, मैं तुमको लेने आया हूँ; परन्तु योग से विकर्माजीत ज़रूर बनना है। छी–2 आत्मा वहाँ आ न सके। मेरे साथ योग लगाते रहो तो पतित आत्मा स्वच्छ हो जाए। फिर तुम हमारे पास चले आवेंगे। इस दुनिया को भूल निराकारी दुनिया (बाप का घर) याद करनी पड़ती। सतयुग में तो जानते हैं, हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी तो समझते हैं, हम वापिस बाबा पास जाए फिर आकर राज–भाग लेंगे। यह याद रहे तब अतिइन्द्रिय सुख का नशा चढ़े। पिछाड़ी में तुम्हारी ऐसी अवस्था होती है, जो अच्छे पुरुषार्थी हैं। अभी नाटक पूरा होता है। जल्दी अपने धाम जाए फिर आवेंगे। ऐसी–2 बातें अपने से करनी होती है। रावण की बांडेज से तो वो बाप ही छुड़ाए सकते हैं। अगर हाथ छोड़ा तो फिर रावण का रावण रह जाता है। पुरुषार्थ बन्द हो जाता है। फिर इसके लिए कहा जाता, तकदीर बनाने आए फिर लकीर लगाए गए। तुम खुद .... सो तो ज़रूर होगा। झट माया नाक से .....ती है। बी.के. ऐसी हैं, गुस्सा करती हैं। बी.के. याद (का) कारण नहीं निकाल सकते। गुस्सा तुम्हारी तकदीर पर है। बी.के. कुछ नहीं करती। हरेक के पुरुषार्थ पर है। पुरुषार्थ थोड़े ही छोड़ देना है। पुरुषार्थ छोड़ा, यह मरा। 5 विकार खाकर पूरा कर लेते हैं। जैसे मक्खी मरती है तो चींटियाँ उसको ले जाती हैं ना। तो 5 विकार भी पूरा खाकर एकदम ले जाते हैं अपने घर। उनके लिए वैकुण्ठ घर खलास हो जाता है। ऐसे बहुत बच्चे रुसते हैं। ब्राह्मणी ने कुछ कहा और छोड़ दिया। उनकी जो आबादी होने से सो अपनी बरबादी कर दी। माया अच्छी तरह से पकड़ लेती है। यहाँ से मरा खेल खतम। बाबा कहते हैं, जिसको राहू की दशा बैठती है वो एकदम मर जाते हैं। किसको शनिचर की दशा, किसको राहू की दशा बैठ जाती है। बृहस्पति की दशा होगी तो खूब सर्विस करता रहेगा, विचार–सागर–मंथन करता रहेगा। मेहनत कर और कराता रहेगा तो समझो, अविनाशी बृहस्पति की दशा है; नहीं तो फिर अविनाशी राहू की दशा भी बैठेगी। फिर तो ऊँच पद पाए न सके। पुरुषार्थ कर बृहस्पति की दशा बिठानी चाहिए। बाप की सर्विस लेनी और करनी चाहिए। सर्विस वालों को बुद्धि बहुत दौड़ानी होती है। शिवबाबा से बहुत अच्छा योग चाहिए, सो भी जब निश्चय हो तब योग लगे। विकर्म हुआ तो योग टूट जावेगा। योग टूटता है तब विकर्म होते हैं अथवा विकर्म होते हैं तब योग टूटता है। बात एक ही है। बड़ी भारी मेहनत है। (शिवबाबा वाला गीत) हमने जाना, हमने पाया। देखा, अक्षर राँग है। उनको देखा तो दिव्य दृष्टि से जाता है, नहीं तो फिर कहेंगे– हम देखा नहीं है तो कैसे कहें, हमने पाया है। उनको बुद्धि से जाना जाता है। नॉलेज से ही मालूम पड़ता है। ज्ञान सागर है ना। नॉलेज है तो ब्लिस है। टीचर नॉलेज देते हैं तो कमाई करने लाय(क) बन जाते हैं। जितना पढ़ेंगे इतना अपन पर ब्लिस करेंगे। अच्छा, सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ